DIGINOVA

LITTLE KITES DIGITAL MAGAZINE

2025

Marakaz girls higher secondary school , Karanthur

INDEX

- Preface...4
- Felicitation Message..5-6
- Editorial board..7
- സമയമില്ലെങ്കിൽ മനുഷ്യനില്ല..8
- ജീവിതം...9
- प्रदूशण..10-12
- The need for compassion in the present scenario...........13-14
- ഒളി പറക്കും നേരം..15
- ഒരു പുനർജന്മം...16
- *Jamaalu thwabeea*...17
- Too alive to be dead..18-19
- *Aswathu sudani*..20-21
- തിരിച്ച് കിട്ടാത്ത അമൂല്യം..22-24
- From loneliness towards success.................................25
- കാത്തിരിപ്പ്...26
- *Zakhmon ki Khushboo*..27
- അധോലോകം..28-29
- Be the light...30
- എന്റെ പച്ച പൂങ്കാവ്...31
- Quotes..32
- ഓ ബാല്യമേ...33
- *Annooru fil athma*..34

- മരണം..35
- മരുഭൂമിയിലെ അത്ഭുതവിത്തുകൾ..36-37
- Voices of Gaza..38-39
- Drawings..40-43

PREFACE

Step into a world of creativity, knowledge, and inspiration—crafted by our very own students and teachers. This digital magazine is a space where ideas come alive through articles, art, photography, interviews, and more. Explore the latest editions, discover student achievements, and celebrate the vibrant spirit of our school community. Stay curious, stay inspired, and enjoy reading!

- Editor

FelicitAtion MessAge

It gives me immense pleasure to extend my heartfelt congratulations to the editorial team, students, and teachers on the successful launch of our school's digital magazine. This initiative marks a significant step forward in embracing technology and creativity hand in hand. The magazine serves as a vibrant platform for our students to express their ideas, showcase their talents, and share their voices with the school community and beyond. I am proud of the hard work, dedication, and enthusiasm that have gone into bringing this digital publication to life. May this magazine continue to inspire innovation, collaboration, and a love for learning in every reader.

- Niyas chola
Headmaster [MGHSS Karanthur]

FelicitAtion MessAge

It gives me great joy and pride to extend my heartfelt felicitations to the editorial team, students, and teachers for bringing out the school's **Digital Magazine**. This wonderful initiative reflects our students' creativity, innovation, and enthusiasm for learning beyond the classroom. In today's digital age, this platform provides an excellent opportunity for our young minds to express their thoughts, showcase their talents, and share their achievements with the wider community.

I appreciate the sincere efforts of everyone involved in making this publication a success. May this magazine continue to inspire curiosity, creativity, and excellence in all our students. Wishing the entire team continued success in all future editions.

– Firoz babu .K

Principal, [MGHSS Karanthur]

EDITORIAL BOARD

Chief editor :- *Niyas chola [Headmaster]*

Staff editor :- *Nusrath beevi [Kite mistress]*

Student editors :- *Fathima rabeea*
Sana . P

Members :- *Minha fathima . MP*
Fathima rithuva . NP
Fathima isha .A
Ayisha fahmida

സമയമില്ലെങ്കിൽ മനുഷ്യനില്ല

പോയ സമയം തിരിച്ചുവരില്ല
സമയമോ അവിടെ നിൽക്കുന്നുമില്ല
പണമുണ്ടെങ്കിൽ എന്തും വാങ്ങാം
എന്നൊരു ചൊല്ല് നാം കേട്ടില്ലയോ

അതിനെ തിരുത്താൻ നമുക്കുണ്ട് സമയം
പോയ സമയത്തെ വിളിക്കുവാൻ കഴിയില്ല
സമയം അത്രയും വേണ്ടപ്പെട്ടതാ അതിനെ
പാഴാക്കല്ലേ

വെറുതെ കളയല്ലേ സമയത്തെ കുറ്റപ്പെടുത്തല്ലേ
ഒരുനാൾ നമ്മൾ സമയത്തെ തേടി പോകേണ്ടിവരും
സമയം നമുക്കായി വരില്ല ഓരോ ദിനവും കഴിയും

തോറും സമയത്തിന്റെ വില നാം അറിയുമല്ലോ
കിട്ടുന്ന സമയം പാഴാക്കിയാൽ ഒരുനാൾ കണ്ണീര് ഒപ്പം
പിടിച്ചുനിർത്താൻ കഴിയില്ല നിന്നെ

കാൽകയിൽ നീ എത്തുകില്ല സമയമേ നിൽക്കൂ...
ഇനിയെന്തു ചെയ്യും സമയത്തിനായി ...

- Fathima riza .VK

ജീവിതം

ചിലർ ജീവിതം മുന്നോട്ട് കൊണ്ട് പോകാൻ ആഗ്രഹിക്കുന്നു, മറ്റ ചിലർ മരിക്കാനും ചിലർ അർത്ഥമില്ലാതെ മരണത്തെയും ജീവിതത്തെയും ഭയന്ന് ഇരിക്കുന്നു.യാഥാർത്ഥ്യം എന്തെന്നാൽ ജനിച്ചാൽ ജീവിക്കണം.ജീവിക്കുന്നവൻ മരിക്കുകയും വേണം.അതുകൊണ്ട് ഓരോ നിമിഷവും വിലപ്പെട്ടതാണ്.അത് വിലപ്പെടാത്തവർക്കായി നൽകാതിരിക്കുക.

- Riya fathima.MP

प्रदूशण

इमारा लोगों में एक बहुत बड़ी मुसीबत चल रही है, और हम सब जानते हैं कि उसका कारण क्या है। हमारी इस धरती पर रहने वाले लोग अब धरती का भला नहीं सोच रहे हैं। प्रदूषण का सही नाम सिर्फ "प्रदूषण" नहीं है, बल्कि इसका असली नाम है — "धरती को मारने वाला ज़हर।" प्रदूषण के कारण बहुत से लोग बीमार होकर मर रहे हैं। फिर भी हमारी धरती पर रहने वाले लोग इसे रोक नहीं पा रहे हैं। हमें यह समझना चाहिए कि हमारी धरती को बहुत सुंदर होना चाहिए, लेकिन कोई इस पर ध्यान नहीं दे रहा है, और अगर ऐसा ही चलता रहा तो यह सब हमारे लिए बहुत बुरा साबित होगा।

प्रदूषण अब बहुत सारे लोगों की मौत का कारण बन चुका है। हमारी धरती धीरे-धीरे नष्ट हो रही है, हर तरफ प्रदूषण फैल गया है। भारत में प्रदूषण की स्थिति बहुत गंभीर है। दिल्ली में जो प्रदूषण हो रहा है, वह इतना भयानक है कि हम उसकी कल्पना भी नहीं कर सकते। वहाँ स्कूलों को बंद करना पड़ता है क्योंकि हवा इतनी खराब हो जाती है कि बच्चों के लिए बाहर निकलना भी खतरनाक होता है। वहाँ की हवा जहरीली है, फैक्टरियों से निकलने वाला धुआँ और गंदा पानी नदियों में जाकर उन्हें भूरा कर देता है, जिससे मछलियाँ मर जाती हैं, और वह पानी पीने वाले लोग बीमार पड़ जाते हैं।

प्रदूषण का कारण बहुत बड़ा नुकसान है — इससे न केवल हमारी धरती बीमार हो रही है, बल्कि हमारी जान भी खतरे में पड़ रही है। कभी जो धरती बहुत सुंदर थी, अब वही धरती बुरी और गंदी बन गई है। लोग अब फोन और मशीनों में इतने खो गए हैं कि उन्हें अपने वातावरण की हालत का भी अहसास नहीं है। प्रदूषण को रोकना आसान नहीं है, यह बहुत मुश्किल है, लेकिन असंभव नहीं। इसे रोकने का एक ही रास्ता है — लोगों को प्लास्टिक का उपयोग बंद करना होगा। जब लोग प्लास्टिक का उपयोग बंद करेंगे, तब धरती की हवा को थोड़ा समय मिलेगा और धीरे-धीरे धरती फिर से ठीक होने लगेगी। तब हमारी धरती फिर से सुंदर बनेगी और लोगों की बीमारियाँ भी कम हो जाएँगी।

अब तो हवा में प्रदूषण है, पानी में प्रदूषण है, और धरती पर भी प्रदूषण फैल चुका है। हमारी पूरी धरती नष्ट होने की कगार पर है। पानी में रहने वाली मछलियाँ, हवा में उड़ने वाले पक्षी, और जमीन पर रहने वाले इंसान — सब प्रदूषण के कारण मर रहे हैं। प्लास्टिक और फैक्टरियों से निकलने वाली गंदी

हवा और पानी ने हमारी धरती को बहुत बुरा बना दिया है। लोगों को यह समझना होगा कि यह सब धरती को खत्म कर रहा है। अगर हम इसे नहीं रोक पाए, तो एक दिन ऐसा आएगा जब धरती सब कुछ सहने की ताकत खो देगी और हम सब नष्ट हो जाएँगे।

एक दिन यह सब इतना बढ़ जाएगा कि धरती खुद हमसे बदला लेगी। वह हमें जीने नहीं देगी और इंसानों का इस धरती पर रहना मुश्किल हो जाएगा।

इसलिए, अब समय आ गया है कि लोग एकजुट होकर यह तय करें कि वे कभी भी धरती को नुकसान नहीं पहुँचाएँगे। अगर हम सब मिलकर यह संकल्प लें, तो हम अपनी धरती को बचा सकते हैं।

दिल्ली में न तो हवा अच्छी है और न ही पानी। वहाँ रहने वाले लोगों को पीने के पानी के लिए पैसे देने पड़ते हैं। वहाँ की हवा इतनी खराब हो गई है कि सांस लेना भी मुश्किल है। लोगों को यह समझना होगा कि धरती के पास अब और सहने की ताकत नहीं बची है। अगर हमने अभी भी इसे नहीं बचाया, तो एक दिन हमारी दुनिया खत्म हो जाएगी और इंसान का अस्तित्व मिट जाएगा।

हमारी धरती पर प्रदूषण के कारण बहुत सारे बच्चे और लोग मर रहे हैं। इसलिए हमें यह तय करना होगा कि हम अपनी धरती की रक्षा करेंगे। यह धरती हमारा घर है, और हमें हमेशा याद रखना चाहिए कि धरती हमारी माता-पिता के समान है। हमें उसकी रक्षा करनी ही होगी।

-Ayisha Husna

THE NEED FOR COMPASSION IN THE PRESENT SCENARIO

Compassion isn’t something to ask for; it is an emotion that humanity shows to the helpless ones. The need for compassion is increasing day by day as wars and rivalries between countries continue to grow. Humanity is becoming greedier and more selfish with each passing day, which in turn is increasing the number of helpless people. Because of wars and other political rivalries, poor human beings are becoming homeless and hopeless.

As per the information available, the most crucial situation needing compassion right now is the war between Gaza and Israel. The level of compassion required there is beyond imagination. From old people to little children, innocent lives are being lost every second in the land of Gaza. The political powers behind the war are showing no mercy to the people. The people of Gaza are becoming hopeless. Small babies are dying on the very day they are born. The cruel minds behind this war are not even allowing those children to see the world for a single day. While the rest of the world sleeps peacefully, the people of Gaza are struggling to survive, to protect their families, and to defend their homes. They are fighting just to sleep peacefully for one night, to have one proper meal — this is where compassion is truly needed.

When the rest of the world eats, sleeps, and enjoys the comforts of life, the people of Gaza are praying to God for mercy. They are losing hope and strength day by day. From the old to the young, people of all ages are kneeling down, weeping and crying for freedom. This heartbreaking situation exists because humanity has lost the sense to feel the pain of others. If compassion could rise again in such situations, the whole world could be restored and changed.

The role of compassion brings a ray of hope to the helpless parts of our society. When we set aside greed, selfishness, and cruelty, and replace them with love, kindness, and empathy, we can build a better and brighter world together.

- Isha fathima .N

ஒளி பறக்கும் நேரம்

இருள் சூழ்ந்த இரவில்,
எல்லாம் மௌனத்தில் உறங்கும் போது,
என் இதயம் விழிப்பில் இருக்கும்,
கனவுகளின் பாதையில் நடந்தால்.

அழகிய காலங்களில்,
நெஞ்சம் காயம் அடைந்தாலும்,
ஒளி தோன்றும் நம்பிக்கையில்,
நீயே உன் தீபத்தை ஏற்றுவாய்,
மற்றவர்களைப் பின்தொடராமல்.

பாதையில் நின்றிருக்கும் கோரைகளைத் தட்டி,
என் கால் இரத்தமோடு நகரும் போது,
நான் உணர்ந்தேன் —
ஒளி தாங்கப்படுவதில்லை,
அது உன் உள்ளத்தின் வலி மூலம் பிறக்கும்.

- Ayisha fahmida.P

ഒരു പുനർജന്മം

മനസ്സായ ലോകമേ,

എന്റെ സംഘർഷങ്ങൾ നീ കാണുന്നു.

മനസ്സിനുള്ളിലെ കുറുക്കുവഴികളിൽ ഞങ്ങൾ

കൂടി സഞ്ചരിക്കും.

എന്റെ സ്വാതന്ത്ര്യതലങ്ങൾ കൂട്ടി മുട്ടും,

എന്റെ കർമ്മങ്ങൾ ആഞ്ഞടിക്കും,

എന്റെ സ്വപ്നങ്ങൾ കാറ്റിൽ ഉയരും.

നാം, അഗ്നിയെ കാറ്റും മഴയും തകർക്കും,

സ്വപ്ന സാക്ഷാത്കാരത്തിൽ

സ്വാതന്ത്ര്യത്തിൽ

എന്റെ മനസ്സ് വീണ്ടും ഉയരും —

ഒരു പുനർജന്മം.

-Ayisha eiza

جَمالُ الطَّبِيعَةِ

فِي صَمْتِ الصَّبَاحِ
تَتَلَأْلَأُ القُطَرَاتُ عَلَى الأَوْرَاقِ،
كُلُّ وَرْدَةٍ تُغَنِّي لِلرِّيحِ،
وَكُلُّ شَجَرَةٍ تَحْمِلُ أَسَاطِيرَ الزَّمَنِ.

تَسْرِقُ الطُّيُورُ الأَنْفَاسَ بِأَصْوَاتِهَا،
وَتُعَلِّمُنَا أَنَّ الحَيَاةَ بَسِيطَةٌ،
وَأَنَّ الجَمَالَ لَا يُشْتَرَى،
بَلْ يُحْسَبُ فِي كُلِّ نَسِيمٍ، فِي كُلِّ ضِيَاءِ شَمْسٍ.

فِي هَذِهِ البَسَاطَةِ، نَجِدُ الرَّاحَةَ،
وَنَسْمَعُ صَوْتَ قُلُوبِنَا،
تَرْتَجِفُ مَعَ الحُبِّ لِلأَرْضِ،
وَتَرْسُمُ لَنَا طُرُقَ الأَمَلِ.

- Sana . P

TOO ALIVE TO BE DEAD

Looking out the window,
Staring at the raindrops,
Shattering against the glass,
Like the stars turning to dust.

Through the window I see,
The dog sheltering its kids.
Through the window I see,
The birds protecting their chicks.

And I wonder,
Who’s out there
To get me through the storm?
Who’s out there
To shelter me through the storm?

Then I see a widow,
Mourning her husband’s death,
Even through the storm,
With his favourite lilies on his tomb.

And I wonder,
Who would mourn if I die?
Who knows my favourite flower,
To put it on my tomb?

And I see a young man,
Hugging his maiden.
And I wonder,
If anybody has ever loved
Me like that.

And I see myself,
Falling into the abyss,
Which I turned into
A graveyard of dreams
That never had a chance,
And hopes
That were buried alive.

And I see myself
Turning into one of them —
A corpse too alive to be dead.
And I tried to scream,
But I heard nothing.
And I turned into a corpse
Too alive to be dead

- Fathima rifa

أَصْوَاتُ السُّودَانِ

فِي حَرَارَةِ الذَّهَبِ عَلَى السُّهُولِ اللَّامُتَنَاهِيَةِ،
حَيْثُ يَهْمِسُ النِّيلُ عَبْرَ الْعُرُوقِ الْقَدِيمَةِ،
يَعِيشُ شَعْبٌ بِقُلُوبٍ لَا تَنْحَنِي،
أَصْوَاتُهُمْ قَوِيَّةٌ، وَأَرْوَاحُهُمْ فَخُورَةٌ.

عَبْرَ الْغُبَارِ وَالرِّيحِ، عَبْرَ الْأَلَمِ وَالصِّرَاعِ،
يَتَمَسَّكُونَ بِخَيْطِ الْحَيَاةِ بِإِحْكَامٍ.
أَطْفَالٌ يَضْحَكُونَ فِي حُقُولِ الرِّمَالِ،
أَحْلَامُ السَّلَامِ فِي كُلِّ يَدٍ.

الدُّمُوعُ تَسْقُطُ مِثْلَ مَطَرِ الصَّحْرَاءِ،
خَسَارَةٌ وَحُزْنٌ وَجُوعٌ وَأَلَمٌ.

وَمَعَ ذَلِكَ يَنْهَضُ الأَمَلُ مَعَ كُلِّ فَجْرٍ،
نُورٌ عَنِيدٌ يَسْتَمِرُّ فِي الإِشْرَاقِ.
أَيْدٍ تَبْنِي، وَقُلُوبٌ تَهْتَمُّ،
أَغَانِي الشَّجَاعَةِ تَمْلَأُ الْهَوَاءَ.
وَعَلَى الرَّغْمِ مِنْ قُدُومِ الْعَوَاصِفِ وَكِبَرِ الظِّلَالِ،
يَعْرِفُ شَعْبُ السُّودَانِ دَائِمًا:
أَنَّهُ حَتَّى فِي أَحْلَكِ اللَّيَالِي،
أَرْوَاحُهُمْ شُجَاعَةٌ، وَقُلُوبُهُمْ مُشْرِقَةٌ.
عَبْرَ الْمِحَنِ وَالصِّرَاعَاتِ وَالانْتِصَارَاتِ،
يَتَأَلَّقُونَ مَعًا، كَوَاحِدٍ تَحْتَ الشَّمْسِ.

- Ummu kulsoom.NP

തിരിച്ച് കിട്ടാത്ത അമൂല്യം

(വിഷയം: സമയം)

തിരിച്ച് കിട്ടാത്തത് ഒന്നേയുള്ളൂ,
അത് സമയമാണ്… സമയം തന്നെയാണ്.
ഓർക്കു കുട്ടികളേ, നാം ഒന്നായ് —
നഷ്ടപ്പെട്ട നിമിഷം മടങ്ങിവരില്ലല്ലോ.

ഓരോ നിമിഷവും അമൂല്യമാണ്,
വിലയിരുത്താൻ നാം പഠിക്കണം.
കാലം കടന്നുപോയാൽ പിന്നെ,
കൈയിലൊന്നും ബാക്കിയില്ലാതാകും.

എന്നിൽനിന്ന് മാഞ്ഞുപോയ നാളുകൾ,
വീണ്ടും വന്നാൽ എത്ര സ്വപ്നങ്ങൾ!
നിറവേറ്റാനായേനേ ആഗ്രഹങ്ങൾ,
സഫലമാകാനായേനേ ശ്രമങ്ങൾ.

പൂർത്തിയാകാതെ പോയ കഥകൾ,
പുതിയ അദ്ധ്യായങ്ങളാകാമായിരുന്നു.
ചെറിയ കുഞ്ഞിക്കുരുന്നുകളുടെ മനസിൽ,
വിജയം വിതച്ചേനേ ആ നിമിഷങ്ങൾ.

അതിനാൽ നാം ഓരോ പ്രവർത്തിയും,
കൃത്യനിഷ്ഠയോടെ ചെയ്യേണ്ടതാണ്.
മന്ദതയും അനാസ്ഥയും ചേർന്നാൽ,
സമയം തന്നെ നമ്മെ മറക്കും.

ദൈവം നല്കിയ ഈ വിലപ്പെട്ട ദാനം —
സമയം! അതിനെ ചെലവഴിക്കൂ സ്നേഹത്തോടെ,
ആസ്വദിക്കൂ ചിരിയോടെ, സന്തോഷത്തോടെ,
ഒരുനിമിഷവും പാഴാക്കാതെ.

കുട്ടികളേ, ഇതാണ് നിങ്ങളുടെ കാലം —
ഇതിൽ സ്വപ്നങ്ങൾ വിതെച്ചീടൂ.
സമയമെന്ന സൂര്യനെ പിടിച്ചുനിർത്തി,
ജീവിതം പ്രകാശിപ്പിക്കൂ!

തിരിച്ച് കിട്ടാത്തത് ഒന്നേയുള്ളൂ,
അത് സമയമാണ്... അത് സമയം തന്നെയാണ്.
കാലം പോയാലും ഓർമ്മയിലാകട്ടെ,
നമ്മുടെ ബാല്യത്തിന്റെ മാധുര്യം.

പിന്നീട് ചെയ്യാം എന്ന് നീട്ടിയിടുമ്പോൾ,
മരണം ചുവടുവെയ്ക്കുന്നെന്ന് ഓർക്കൂ.
ജീവിതം ചെറുതാണ് — അതിനാൽ,
ഓരോ നിമിഷവും വിജയമാക്കൂ.

കുരുന്നുകളേ... കൊച്ചു പൂമ്പാറ്റകളേ...
സമയം സ്വർണം, അത് അറിയൂ.
സമയത്തെ മനസ്സിലാക്കി ജീവിക്കൂ,
സമയത്തെ മാനിച്ചാൽ വിജയമെന്നു വിളിക്കും ലോകം.

- Ayisha fahmida .P

FROM LONELINESS TOWARDS SUCCESS

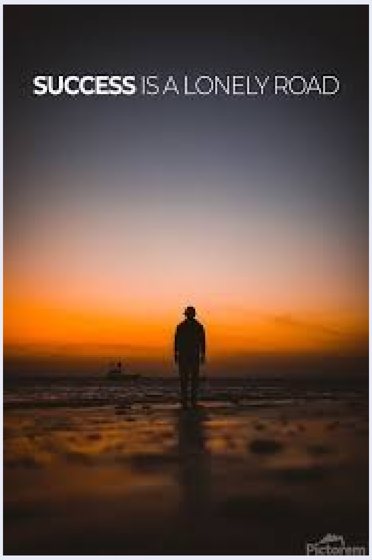

On the path of loneliness,
There may be blocks of hardship.
Strive and move,
For great and happy moods.
If impaired, thrive inspired.

Learn from your wrongs,
And move through your nights,
Until you reach the great heights of success.
Transform your life,
Before fate transforms you.

Shine in your time, just like the moon;
Shine brighter, as the sun does.
Be the king of your court,
Roar like a lion in your success.

It’s time to realize how talented you are!
Remember — loneliness is not an impairment,
But a challenge on the way to success.
Be the good person you are meant to be.

Life is a boat where loneliness is the saw;
Solitude begins when the passengers leave.
Hack the solitude before it attacks you.

- Fathima rithuva .NP

കാത്തിരിപ്പ്

ഈ ജനവാതിലിലിലൂടെ മിഴികൾ

തലോടാവേ........

കാഴ്ചകായ് നിൽപിത നിൻരൂപം.......

എന്തിനെൻ പ്രാണനെ നീ

മാഞ്ഞുപോയി......

നാമൊരുമിച്ച കണ്ടോര

സ്വപ്നങ്ങളൊക്കെയും.....

രുവലായി പോയിഞ്ഞു...

എങ്കിലും ഞൻ നിൽപിവിടെ....

നാളെ നാം ഒരുമിച്ച കാണും.....

സ്വർഗ്ഗത്തിൽ വെച്ച് ഒരു നാൾ.....

- SHIFA AC

زَخْموں کی خُوشبُو

رَات کے سَنّاٹے میں
جَب سَب سوتے ہیں،
مَیرَا دِل جاگتَا ہے
اَپنے خَوابوں کے مَزار کے پاس۔

یَہ زَخْم بھی عَجیب ہیں،
دَرْد دِیتے ہیں — مَگر
اِن ہی سے خُوشبُو آتی ہے،
جینے کی، چَلنے کی
مَحَبّت کرنے کی۔

-Fathima najeeha

അധോലോകം

റൂഹിയുടെ ജീവിതം എന്താണ് എന്ന് പോലും അവൾക്ക് അറിയില്ല. കുറച്ച് കാലം മുമ്പ് അവൾ കൊല്ലം HSS സ്കൂളിൽ പഠിക്കുന്ന സമയം അവൾക്ക് അത്യാവശ്യം കയ്യിലെണ്ണാവുന്ന തരത്തിലുള്ള കൂട്ടുകാരൊക്കെ അവൾക്കുണ്ടായിരുന്നു. അവരുടെ കൂടെ ഇരിക്കുമ്പോൾ അവൾ വളരെ ഹാപ്പി ആയിരുന്നു. ചെറിയ ക്ലാസ് മുതലെ അവളുടെ ഉമ്മയുടെ ആഗ്രഹമായിരുന്നു അവളെ പഠിപ്പിച്ച് വലിയ ആളാക്കണമെന്ന് 1 മുതൽ 10 വരെ അവൾ ക്ലാസിൽ ഫസ്റ്റ് അല്ലെങ്കിൽ സെക്കൻ്റ് ആയിരുന്നു. പക്ഷെ അവളെ ഉമ്മ കളിക്കാനോ ഫ്രണ്ട്സിന്റെ കൂടെ പോകാനോ അവളെ വിടാൻ തയ്യാറായിരുന്നില്ല. അതുകാരണം അവൾ ഒറ്റക്കായിരുന്നു . കൂടെ ആരുമില്ല, ഒറ്റക്ക് ഒരു മുറിയിൽ കഴിയുന്ന ജീവിതം പോലെ +1 ൽ അവൾക്ക് കോമേഴ്സ് എടുക്കാനായിരുന്നു താൽപര്യം. പക്ഷെ ഉമ്മ കർശനമാക്കിയതാണ് സയൻസ് എടുക്കാൻ. ഉമ്മാന്റെ താൽപര്യ പ്രകാരം അവൾ സയൻസ് എടുത്തു കുറച്ചു ദിവസം അവൾ +1 ലും ഒറ്റക്കായിരുന്നു 2, 3 ആഴ്ച കഴിഞ്ഞപ്പോൾ അവൾക്ക് കുറച്ചു ഫ്രണ്ട്സിനെ കിട്ടി അവരുമായി അവൾ വളരെ ഹാപ്പിയായിരുന്നു. exam കഴിഞ്ഞപ്പോൾ അവൾക്ക് മാർക്ക് കുറവായിരുന്നു. അവൾ അത് ഉമ്മയോട് പറയണ്ട എന്ന് കരുതി പക്ഷേ ടീച്ചർ അവളുടെ ഉമ്മയെ വിളിച്ചു പറഞ്ഞു. അതറിഞ്ഞ ഉമ്മ നല്ല ദേഷ്യം പിടിച്ചു.

അവളെ ഒരു പാട് തല്ലി ഉമ്മ അവളോട് പറഞ്ഞു " ഇനി മതി ഇവിടെ

പഠിച്ചൊതൊക്കെ കുറച്ച് ഫ്രണ്ട്സ് വന്നീണ്ട് അവരൊക്കെ പഠിച്ച് മാർക്ക് വാങ്ങി നീ മാത്രം തോറ്റ് . ഞാൻ പൈസ കൊടുത്താണെങ്കിലും ഇവിടെന്ന് അന്നെ മാറ്റാൻ പോവാ". ഉമ്മ അവളെ ഫോർസ് ചെയ്ത്ത് കോഴിക്കോട്ക്ക് വീട് മാറി അവടെ അവൾ പഴയത് പോലെ ആരുമില്ലാതെ തനിച്ച് ജീവിക്കൽ തുടങ്ങി. പുറം ലോകം അറിയാതെ. അവൾ അവളുടെ കൺട്രോളിലല്ലാതെ ജീവിക്കുകയായിരുന്നു . വേറെ ഏതോ ഒരു അധോലോകത്തെ ജീവിതം.

-Fathima isha .A

BE THE LIGHT

On a dark, stormy, and rainy night,
Everyone seeks refuge behind a closed door.
At that time,
With the flame born from a roaring lightning,
Set your own fire —
And shine alone.

No one listens to your call,
No one speaks to you.
Everyone is afraid,
No one joins you on your journey,
Everyone turns away.

If everyone turns away,
And no one is there to come with you,
On that dark road —
Be the light for the path.
You must crush the thorns beneath your bleeding feet,
And walk alone.

- Noora jasmine

എന്റെ പച്ച പൂങ്കാവ്

ഒന്നാം തരംഗമായി വന്ന ഒരു വിളി,

വിദ്യാലയത്തിന് ഹരിതപോളിമ മാറ്റാൻ

തുടങ്ങേണ്ടത്.

അകത്തളത്തിൽ നമ്മുടെ മണ്ണിൽ മനസ്സിൽ നട്ടുവളർത്തി,

ഞങ്ങൾ ചെറുകൈകളാൽ പൂമൊട്ടുകൾ, ഫലവൃക്ഷ ചില്ലകൾ പൂവിട്ടു.

തണൽ വിരിച്ചാൽ, വിദ്യാലയം എന്നൊരു തണുത്ത പൂങ്കാവ്,

വെള്ളം പാഴാക്കില്ല, മാലിന്യം വലിച്ചെറിയില്ല,

ചവറുകൾ മാറ്റി മണ്ണിൽ വളമാക്കും.

ഓരോ തുള്ളിയും ഞങ്ങൾ നൽകി, പ്രകൃതി വന്ദനം,

വെളിച്ചം നിറക്കും, പച്ചപ്പിന്റെ പാഠം ഇവിടെ പടർത്തും.

എന്റെ വിദ്യാലയം വെറുമൊരു കെട്ടിടമല്ല,

ഹരിത സ്വപ്നങ്ങൾ പൂക്കുന്ന ലോകം.

പച്ചപ്പിന്റെ സാക്ഷ്യം കണ്ടത്,

ഹരിത വിദ്യാലയം അവാർഡ് നമുക്ക് സ്വന്തം.

ഈ ലോകത്തിനായി, നല്ല നാളെക്കായി,

കൈകോർത്ത് മുന്നോട്ട്...

എന്റെ വിദ്യാലയം

-Ayisha rabeeh

QUOTES

“Don’t think you are alone,
you have yourself”.

“ We are like birds
sometimes we fall from flying ,
sometimes we keep flying.”

“There is no one
as loyal as book.”

“Life is a book,
we want to make that book beautiful.”

-Noora jasmine

ഓ ബാല്യമേ

മഴയിൽ കുളിച്ച മരങ്ങളേ ,

കണ്ടുവോ,

മറവിയിലെൻ പോയ ബാല്യം?

ഒരു വേള കാണുമോ

കാതലിന്റെ പണ്ടെന്റെ

ചെറുനഖം കോറിയ ചിത്രം

ഒരു കൊമ്പിലുണ്ടാകാം ഞാൻ

തൂങ്ങിയാടിയ

വിരലടയാളങ്ങളിന്നും

ഇലകളെല്ലാം പുതുതെങ്കിലും വേരിലെൻ

പനിയുടെ കുളിരും

കാണും

-Kadeeja faiza

النُّورُ فِي العَتْمَةِ

فِي لَيْلٍ طَوِيلٍ بِلَا نُجُومٍ
أَبْصَرْتُ قَلْبِي يَشْتَعِلُ مِنَ الصَّمْتِ.
لَا أَحَدَ سَمِعَ نِدَائِي،
وَلَا يَدٌ ٱمْتَدَّتْ إِلَيَّ.

فَأَشْعَلْتُ نُورِي بِنَفْسِي،
وَوَضَعْتُهُ أَمَامَ خُطَايَ ٱلْجَرِيحَةِ،
أَمْشِي عَلَى ٱلشَّوْكِ،

وَأَبْتَسِمُ لِلظَّلَامِ

لِأَنِّي أَدْرَكْتُ أَخِيرًا —
أَنَّ ٱلنُّورَ لَا يُعْطَى،
بَلْ يُولَدُ مِنَ ٱلْأَلَمِ

-Fathima minna

മരണം

ഓർക്കാപ്പുറത്തിന്റെ

ജീവിതവാതിലിൽ

ആരോ വന്ന് എന്നെ

മുട്ടിവിളിച്ചു.

അറിഞ്ഞിരുന്നില്ല ഞാൻ,

പാതിവഴിയിലെൻ

യാത്ര അവസാനമാകുമെന്ന്.

അറിഞ്ഞിരുന്നില്ല ഞാൻ,

ഇനിയൊരു നാളിലും

തിരികെ വരാത്ത ഒരു യാത്രയെന്ന്.

എങ്കിൽ പ്രിയമുള്ളവർക്ക്

ഒരു ചുംബനം നൽകി

മടങ്ങിയേനെ.

-Fathima sana .P

മരുഭൂമിയിലെ അത്ഭുതവിത്തുകൾ

ഒരിടത്ത് പൂഴിമണൽ മാത്രം നിറഞ്ഞ ഒരു വലിയ മരുഭൂമി ഉണ്ടായിരുന്നു. അവിടെ ആരവ് എന്നൊരു കൊച്ചു മിടുക്കൻ താമസിച്ചു. ആരവിന് ചെടികളും മരങ്ങളും വളരെ ഇഷ്ടമായിരുന്നെങ്കിലും, അവന്റെ നാട്ടിൽ ഒരു ഇല പോലും ഇല്ലായിരുന്നു.

ഒരു ദിവസം, ആരവ് ദൂരെ ഒരു വലിയ മണൽക്കുമ്പാരത്തിന് മുകളിൽ തിളക്കമുള്ള മൂന്നു വിത്തുകൾ കണ്ടു. പച്ച, നീല, സ്വർണ്ണനിറം; സാധാരണ വിത്തുകൾ അല്ലെന്ന് മനസ്സിലാക്കി, അവൻ അവവിടെയിന്ന് വീട്ടിലേക്ക് കൊണ്ടുവന്നു.

പച്ച വിത്ത് മരുഭൂമിയിലെ ഏറ്റവും ഒണങ്ങിയ മണ്ണിൽ കുഴിച്ചു. ഒരുപാട് കഷ്ടപ്പെട്ടുമ്പോഴും പച്ച വിത്ത് ഒറ്റരാത്രിക്കൊണ്ട് വളർന്നു, ഒട്ടകങ്ങൾക്കും യാത്രക്കാർക്കും തണലേകാൻ കഴിയുന്ന ഒരു വലിയ മാങ്ങമരം ആകി.

നീല വിത്ത് വീട്ടിലെ തണുത്ത മണൽമൺകുടിലെ വെള്ളത്തിൽ ഇട്ടു. രാവിലെ ആ വെള്ളം നീല നിറത്തിൽ തിളങ്ങി, ഗ്രാമത്തിലെ എല്ലാവർക്കും ദാഹം തീർക്കാൻ സഹായിച്ചു. എന്നാൽ സ്വർണ്ണവിത്ത് മാറ്റമില്ലാതെ അവന്റെ പോക്കറ്റിൽ ഇരിക്കുകയായിരുന്നു.

വിത്തുകൾ എവിടെ നിന്നുവന്നു എന്ന് ആരോ അന്വേഷിക്കാൻ പോയി. സൂര്യരശ്മി പതർന്നപ്പോൾ, മണൽക്കുമ്പാരത്തിന് മുകളിൽ ചെറിയ ഒരു തടി പെട്ടി കണ്ടു. പെട്ടി തുറന്നപ്പോൾ ഒരു സന്ദേശം കാണപ്പെട്ടു:

"പച്ച വിത്ത് പ്രകൃതിക്കും ജീവികൾക്കും ജീവൻ നൽകുന്നു. സ്വർണ്ണത്തിൻറെ കാര്യത്തിൽ, നിന്റെ നല്ല മനസ്സിനോട് ആവശ്യപ്പെടുക; അത് നിറവേറും."

ആരവ് സ്വർണ്ണ വിത്ത് കയ്യിലെടുത്തു. വലിയ സമ്പത്തോ കൊട്ടാരങ്ങളോ ആവശ്യമില്ല; സ്നേഹമാണ് അവന്റെ ആഗ്രഹം. ആരവ് ആഗ്രഹിച്ച്, "എൻറെ മരുഭൂമിയിൽ എപ്പോഴും തണൽ നൽകുന്ന മരങ്ങളും, ശുദ്ധജലവും, സന്തോഷത്തോടെ ജീവിക്കുന്ന മനുഷ്യരും ഉണ്ടാകണം."

ആരവിന്റെ ആഗ്രഹം കേട്ടു, വലിയ കാറ്റുവീശി മരുഭൂമിയിൽ മഴ പെയ്യാൻ തുടങ്ങി. സ്നേഹവും നല്ല മനസ്സും കൊണ്ട്, മരുഭൂമി ഒരു മനോഹരമായ പൂന്തോട്ടമായി മാറി.

സന്ദേശം: ഏറ്റവും വലിയ മാന്ത്രികം നമ്മുടെ **നല്ല മനസ്സും മറ്റുള്ളവരോടുള്ള സ്നേഹവുമാണ്.**

- Noora sherin

VOICES OF GAZA

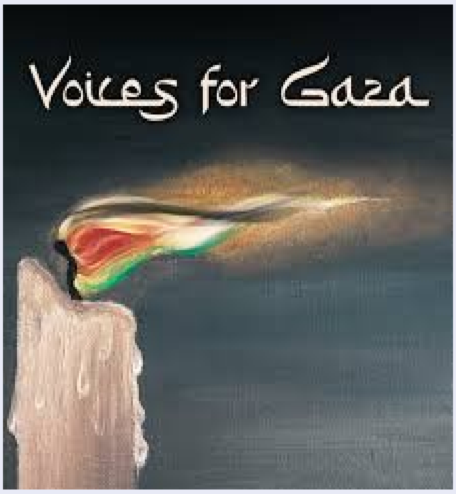

In the narrow streets of Gaza, life went on despite the ruins. Families lived in cramped homes, where walls bore the scars of conflict. Yet, every morning, the city stirred with resilience. Children ran barefoot on dusty roads, women carried water in buckets, and men rebuilt what the night had destroyed.

People of Gaza had learned to live with uncertainty. They celebrated small victories—a day without airstrikes, a roof that didn't collapse, a meal shared with neighbors. In markets, voices rose in laughter and bargaining, a defiance against the fear that tried to dominate their lives.

Ahmed, a father of three, would wake before dawn to fix the city's broken infrastructure. Fatima, a teacher, taught children in makeshift classrooms, using chalkboards salvaged from destroyed schools. Even

the elderly, whose memories carried the pain of decades, offered wisdom and comfort to younger generations.

At night, families gathered on rooftops, looking at the stars that seemed so distant, yet constant. They shared stories of hope, songs of resilience, and prayers for peace. Despite scarcity, grief, and fear, the people of Gaza held onto their humanity—they shared food with neighbors, cared for the sick, and protected each other’s children.

Their lives were fragile, yet their spirits were unbroken. They dreamed of normal days: laughter without sirens, children playing in parks, and streets filled with music instead of rubble. The people of Gaza had become masters of endurance, showing the world that even in the shadow of war, hope could survive.

- Fathima rabeea

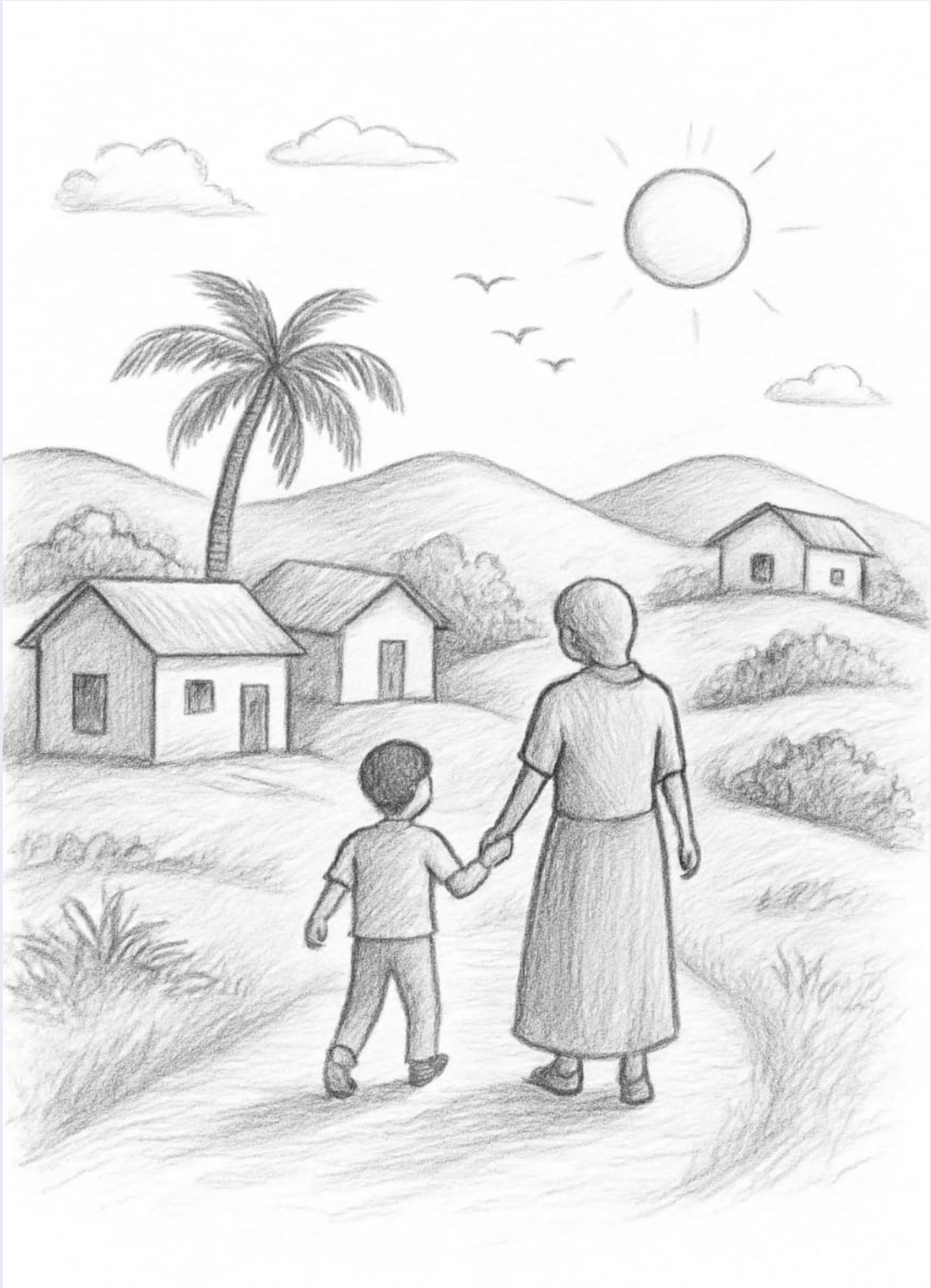

- Ayisha minha

- Fathima hamna .MP

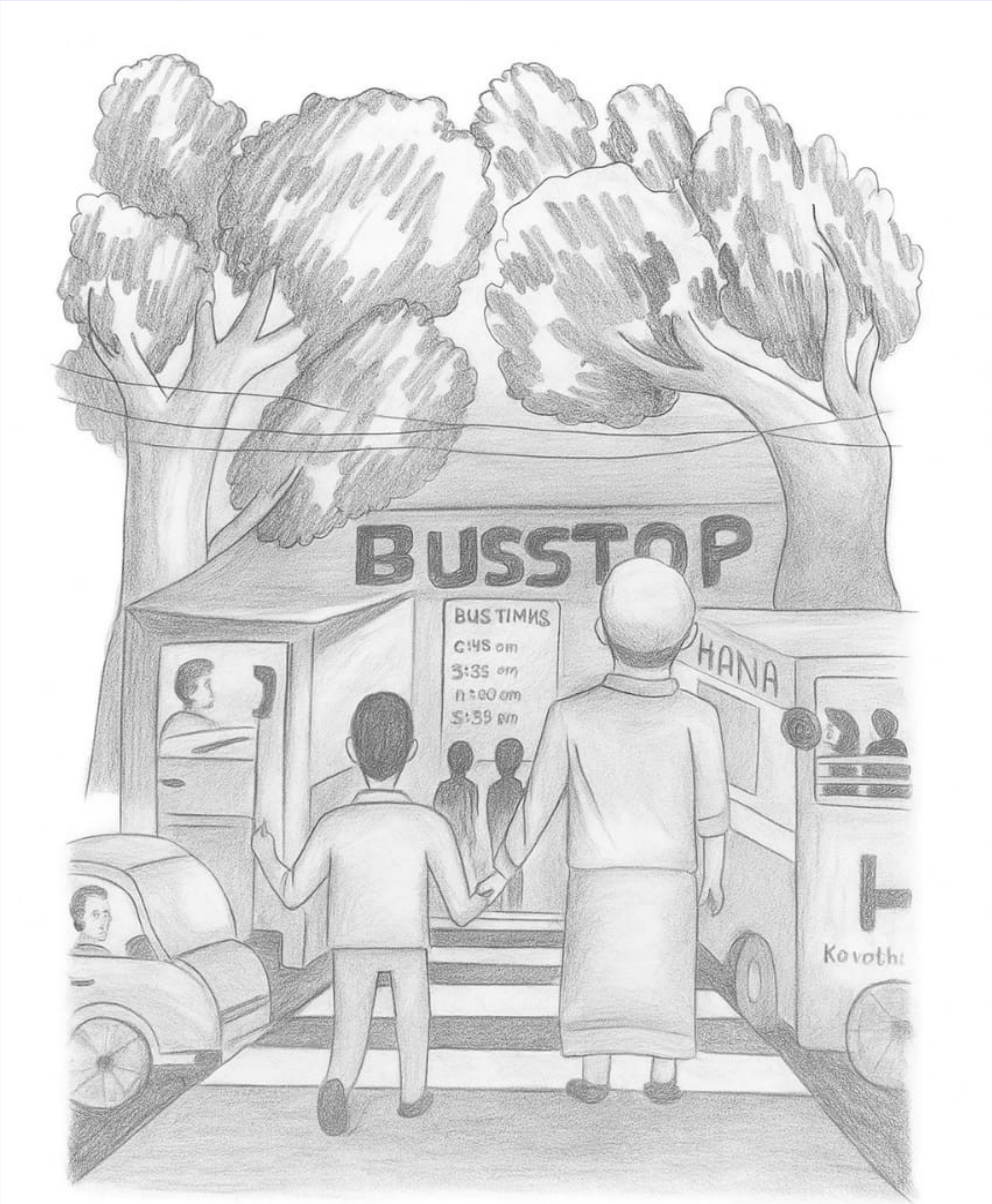

- Hanna .UK

-Mizbah nuvan .VP

“To our wonderful readers — thank you for your time, support, and enthusiasm. This magazine exists because you continue to read, reflect, and inspire us.”

THANKS..